काल-विकराल भैरव-सिद्धि साधना

भैरव साधना को तीव्र साधना माना गया है और जब संकट में, भय में साधक भैरव को पुकारता है तो भैरव तत्काल उस साधक की रक्षा करते हैं, भैरव सिद्धि, बिना न तो कोई शुभ कार्य पूर्ण होता है और न ही कोई यज्ञ अनुष्ठान, अतः यह साधना गृहस्थ साधकों को अवश्य करना चाहिए।

कलियुग में भैरव की साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, क्योंकि इससे कार्यसिद्धि तुरन्त मिलती है और बहुत ही कम प्रयास में प्रत्यक्ष दर्शन हो सकते हैं।

यों तो भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएँ प्रचलित हैं, परन्तु एक महत्वपूर्ण और गोपनीय साधना दी जा रही हैं जिससे कि भैरव तुरन्त प्रसन्न होकर साधक को मनोवांछित वरदान देने में समर्थ हो पाते हैं।

यह साधना कृष्ण पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ की जाती है, साधक किसी भी महीने में इस साधना को प्रारम्भ कर सकता है, प्रातःकाल उठकर साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ मन में यह विचार करें, कि मैं भैरव की साधना करने जा रहा हूं, मैं भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूँ।

साधक पूरे साधना काल में काले वस्त्रों का ही प्रयोग करें, काली धोती और ऊपर काला कुर्ता पहन सकता है, साधना के बाद भी वह दूसरे रंग के वस्त्रों का प्रयोग न करे।

यह साधना यदि जंगल में, शिवालय में, नदी तट पर या श्मशान में करें तो ज्यादा उचित रहता है, घर पर इस प्रकार की साधना का प्रयोग नहीं करना चाहिए, भैरव शीघ्र प्रसन्न होते हैं तो जल्दी ही नाराज भी हो जाते हैं, अतः साधक को सावधानी के साथ इस प्रकार की साधना हाथ में लेनी चाहिए।

जिस दिन साधना प्रारम्भ करें, उस दिन प्रातः मसूर, चने, मूंग और मोठ इन चारों धान्यों को बराबर मात्रा में लेकर पकावें और फिर इसके सोलह भाग कर सोलह पलास के पत्तों पर अपने सामने रख दें, प्रत्येक पत्ते पर तेल का दीपक लगावें और फिर इन सोलह पत्तों से पहले और अपने सामने भैरव की काल्पनिक मूर्ति या भैरव यंत्र स्थापित करें उसका गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करें।

इसके बाद साधक हाथ में अक्षत लेकर उन्हें चारों तरफ बिखेरता हुआ आत्म रक्षा मंत्र पढ़े-

आत्मरक्षा मंत्र-

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः पूर्वे। ऊँ ह्रीं ह्रूं ह्रीं नमः आग्नेये। ऊँ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे। ऊँ ग्लूं ब्लूं नमः नैर्ऋत्ये। ऊँ पूं पूं सं सं नमः पश्चिमे। ऊँ म्रां म्रां नमः वायव्ये। ऊँ म्रां व्रं भ्रं फट् नमः ऐशान्ये। ऊँ ग्लौं ब्लूं नमः ऊर्ध्वे। ऊँ घ्रां घ्रं घ्रः नमः अधोदेशे।

इसके बाद भैरव को हाथ जोड़ कर नमस्कार करें।

ऊँ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिः।
तरुण तिमिर नीलो व्यालयज्ञोपवीती।।
ऋतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

ध्यान के बाद साधक ईशान दिशा की तरफ मुंह करके भैरव मंत्र पढ़ें, एक लाख मंत्र जप से यह सिद्ध हो जाता है और भैरव प्रत्यक्ष दर्शन दे देते हैं।

जैसे कि बताया कि भैरव का स्वरुप अत्यन्त विकराल और क्रूर होता है,

अतः साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ही अपनी इन आँखों से उनके दर्शन करने में समर्थ हो पाते हैं, इसीलिए स्त्रियां, वृद्ध, बालक तथा कमजोर व दुर्लभ चित्त वाले व्यक्तियों को भैरव साधना नहीं करनी चाहिए।

फिर निम्न मंत्र का जप करें, इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

भैरव मंत्र-

ॐ व्रां ह्रीं ह्रूं हः। क्षां क्षीं क्षूं क्षः। ख्रां ख्रीं ख्रुं ख्रः। घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः। भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः। भ्रौं भ्रौं भ्रौं भ्रौं क्लों क्लों क्लों क्लों। श्रों श्रों श्रौं श्रों ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों हुं हुं हुं हु हुं हुं हुं हुं हुं फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ नाथ हुं फट्।।

यह मंत्र अत्यन्त शक्तिशाली है और एक लाख मंत्र जप पूरा करते ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और इसमें किसी प्रकार की अगरबत्ती या दीपक निरन्तर लगाने की आवश्यकता नहीं है, पहले दिन जो सोलह पलास के पत्तों पर भोग लगाया जाता है, उसे मंत्र जप के बाद वहीं छोड़ कर आ जाना चाहिए, क्योंकि भैरव का वाहन श्वान है और सही अर्थो में वह खाद्य पदार्थ श्वान को ही समर्पित होता है।

यदि श्मशान में श्वान उपस्थित न हो तो उस पके हुए धान्य को एकत्र कर किसी श्वान के सामने रख दें।

इसके बाद नित्य इस प्रकार का विधान करने की आवश्यकता नहीं है।

वह मंत्र जप चालीस दिन में या बीस दिन में पूरा हो जाना चाहिए। जब यह विधान या मंत्र जप पूरा होने को होता है तो उससे तीन दिन पहले भैरव के आने की अनुभूति स्पष्ट रुप से हो जाती है, साथ ही साथ उनके पैरों में बंधे घुंघरु स्पष्ट सुनाई देते हैं और भैरव की अस्पष्ट आकृति भी दिखाई देने लगती है।

जिस दिन ऐसी आकृति दिखाई दें, उसके दूसरे दिन उस भैरव की मूर्ति या भैरव के यंत्र पर नीले रंग का वस्त्र समर्पित करें, तेल और सिन्दूर लगावे, धूप, अगरबत्ती के साथ गुग्गुल का धूप भी समर्पित करें, उसी दिन नैवेद्य के साथ तेल चुपड़ी हुई आटे की रोटी पर गुड़ रखकर और मोठ या उड़द की दाल भिगों कर उसे पीस कर मसाले मिलाकर बड़े बना कर नैवेद्य के साथ समर्पित करें।

यदि उस दिन भैरव प्रत्यक्ष न हों तो दूसरे दिन भी ऐसा ही करें, यदि किसी कारण वश दूसरे दिन भी भैरव के दर्शन न हों तो तीसरे दिन भी वैसा ही विधान करें, उस रात्रि को निश्चय ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह हो सकता है कि भैरव विकराल रुप में अथवा सौम्य रुप में दर्शन दें, पर किसी भी हालत में डरें नहीं और नम्रता से उनका मंत्र जप करता रहे।

जब भैरव प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहें, तब साधक उसके सामने तेल का दीपक लगा कर जो प्रसाद बनाया हुआ है, वह उनके दाहिने हाथ में दे दें, ऐसा करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और मनोवांछित वरदान दे देते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और यदि श्मशान में या नदी तट पर साधना की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इस बात का ध्यान रहे कि वह स्थान सामान्यतः निर्जन हो।

साधना के सम्बन्ध में जो भी अनुभव हो वे किसी को बतावे नहीं और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा काले वस्त्र धारण किये रहें।

भैरव प्रसन्न होने के बाद नित्य साधक को स्वर्ण प्रदान करते हैं, यहीं नहीं अपितु जब किसी प्रकार की कोई इच्छा भैरव के सामने रखते हैं, तो भैरव उस इच्छा की पूर्ति अवश्य ही करते हैं।

देश के कई विशिष्ट योगी और साधक भैरव साधना सम्पन्न कर चुके हैं, और इसी प्रकार से उन्होंने जीवन में पूर्णता प्राप्त की है, इस बात का ध्यान रखें कि यह साधना किसी योग्य गुरु या साधक की देख-रेख में ही सम्पन्न होनी चाहिए अन्यथा कुछ विपरीत होने की स्थिति में साधक ही पूर्ण रुप से जिम्मेवार होता है।

इस साधना की पूर्णता के बाद व्यक्ति शत्रुओं पर हावी रहता है। किसी भी घटना को जानने के लिए उसे एक बार मंत्र उच्चारण करना पड़ता है, तो भैरव उसके कान में कह देते हैं। दूसरे के मन की बात भी भैरव साधक को उसके कान में कह देते हैं, दूर स्थित सामान को लाकर देने में सहायक होते हैं, हजारों मील दूर की घटनाओं को प्रत्यक्ष दिखाते हैं और किसी भी व्यक्ति के भूतकाल या भविष्यकाल को जाना जा सकता है, इसके साथ ही साथ जब साधक खाद्य पदार्थ की इच्छा करता है तो उसे तुरन्त खाद्य पदाथ प्राप्त हो जाते हैं, इसी प्रकार धन-धान्य, स्वर्ण आदि की प्राप्ति भी भैरव के द्वारा संभव है।

वस्तुतः भैरव साधना कलियुग में महत्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है।

न्यौछावर राशि- 1551/- ♦♦♦

सन्तान सुख समृद्धि पैकेट

हमारे यहाँ शादी का उद्देश्य मात्र शरीरिक सुख नहीं बल्कि गृहस्थ जीवन का सफल संचालन एवं वंशवृद्धि के लिए संतान की उत्पत्ति करना भी होता है। दाम्पत्य जीवन में कदम रखने के पश्चात् प्रत्येक दम्पत्ति की इच्छा होती है एक सुन्दर सन्तान की प्राप्ति। किन्तु बहुत से दम्पत्ति ऐसे भी होते हैं जिन्हें तमाम कोशिशों के बावजूद सन्तान प्राप्ति नहीं हो पाती, अच्छे से अच्छे डॉक्टरों एवं वेद्यों का सहारा लेने के पश्चात् भी अपनी कामनापूर्ति में बाधाएँ आ रही हो तो अब उन्हें निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि हम लायें हैं आपके लिए संतान-सुख-समृद्धि पैकेट जिसको स्थापित करने के बाद संतान सुख की अधूरी इच्छा पूरी की जा सकती है।

न्यौछावर दक्षिणा- 3500/- रु.

यदि आप अपनी जिन्दगी में व्यस्त हैं और गुरूदेव से अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मिलना चाहते हैं, परन्तु समय नहीं निकाल पा रहे हैं तो निश्चिंत रहें, अब गुरूदेव से फोन के माध्यम से बात करें उपरोक्त जानकारी के लिए जोधपुर कार्यालय से सम्पर्क करें।

मुख्यालय फोन नं.- 0291-2618625, 2621625 एवं 2440011, 2440111